

सामाजिक विज्ञान

(इतिहास)

अध्याय-11: इमारतें, चित्र तथा किताबें



धातु विज्ञान

धातुकर्म पदार्थ विज्ञान और पदार्थ अभियांत्रिकी का एक क्षेत्र है, जिसके अंतर्गत धातुओं, उनसे बनी मिश्रधातुओं और अंतर्धात्विक यौगिकों के भौतिक और रासायनिक गुणों का अध्ययन किया जाता है।

प्राचीन भारतीय धतुवैज्ञानिकों ने विश्व धतुविज्ञान के क्षेत्रा में प्रमुख योगदान दिया है। पुरातात्विक खुदाई ने यह दर्शाया है कि हड़प्पावासी वुफशल शिल्पी थे और उन्हें तांबे वेफ धतुकर्म; धतुशोधनद्ध की जानकारी थी। उन्होंने तांबे और टिन को मिलाकर कांसा भी बनाया था। जहाँ हड़प्पावासी कांस्य युग से जुड़े थे वहीं उनके उत्तराधिकारी लौह युग से जुड़े थे भारत अत्यंत विकसित किस्म के लोहे का निर्माण करता था –

खोटा लोहा, पिटवा लोहा, ढलवा लोहा।



लौह स्तंभ



महरौली (दिल्ली) में कुतुबमीनार के परिसर में खड़ा यह लौह स्तंभ भारतीय शिल्पकारों की कुशलता का एक अद्भुत उदाहरण है। इसकी ऊँचाई 7.2 मीटर और वजन 3 टन से भी ज्यादा है। इसका निर्माण लगभग 1500 साल पहले हुआ। इसके बनने के समय की जानकारी हमें इस पर खुदे अभिलेख से मिलती है। इतने वर्षों के बाद भी इसमें जंग नहीं लगा है। इस स्तंभ का निर्माण गुप्त वंश के महान राजा चंद्रगुप्त विक्रमादित्य की याद में करवाया गया था। महाराज चंद्रगुप्त विक्रमादित्य ने 380 ईसवी से 413 ईस्वी तक राज किया था। यह लौह स्तंभ संभवता उनके पुत्र और गुप्त वंश के अगले राजा कुमारगुप्त ने बनवाया होगा। महाराज कुमारगुप्त ने 413 ईसवी से 455 ईसवी तक राज किया था तो जरूर इस स्तंभ का निर्माण आज से 1604 साल पहले 413 ईसवी में हुआ होगा। स्तंभ पर लिखे शिलालेख के अनुसार यह स्तंभ विष्णुपद पहाड़ी के ऊपर बनाया गया था जिसे शायद 1050 ईसवी में दिल्ली के शासक अनंगपाल जा किसी और द्वारा दिल्ली में लाकर खड़ा किया गया। विष्णुपद पहाड़ी वाला क्षेत्र अब मध्यप्रदेश के उदयगिरी शहर के पास स्थित है जो कि लगभग कर्क रेखा (Tropic of Cancer) पर स्थित है।

ईंटों और पत्थरों की इमारतें

हमारे शिल्पकारों की कुशलता के नमूने स्तूपों जैसी कुछ इमारतों में देखने को मिलते हैं।

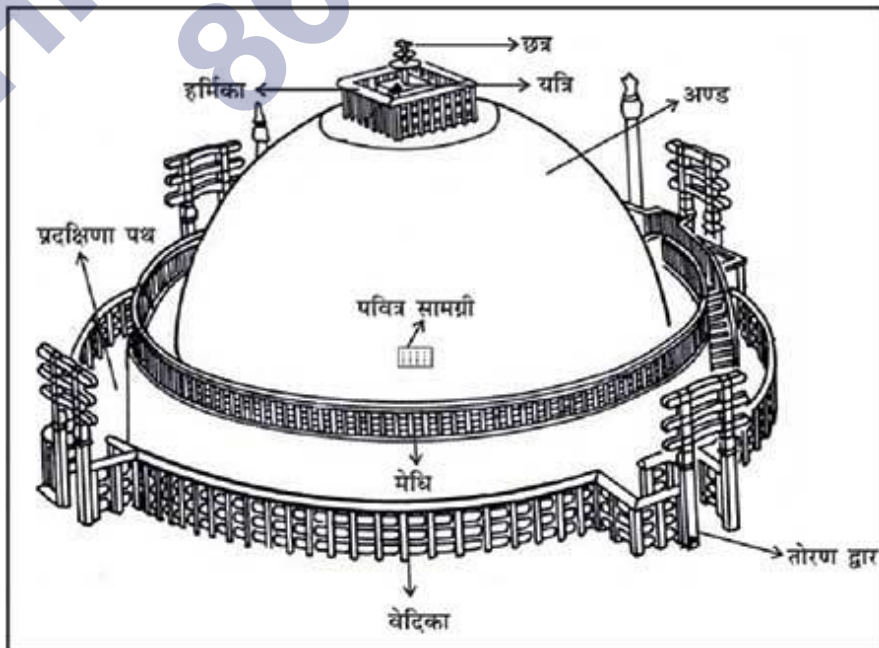
स्तूप का शब्दिक अर्थ ' टीला ' होता है



हालांकि स्तूप विभिन्न आकार के थे - कभी गोल या लंबे तो कभी बड़े या छोटे। उन सब में एक समानता है। प्रायः सभी स्तूपों के भीतर एक छोटा-सा डिब्बा रखा है। डिब्बों में बुद्ध या उनके अनुयायियों के शरीर के अवशेष (जैसे दाँत, हड्डी या राख) या उनके द्वारा प्रयुक्त कोई चीज या कोई कीमती पत्थर अथवा सिक्के रखे रहते हैं।



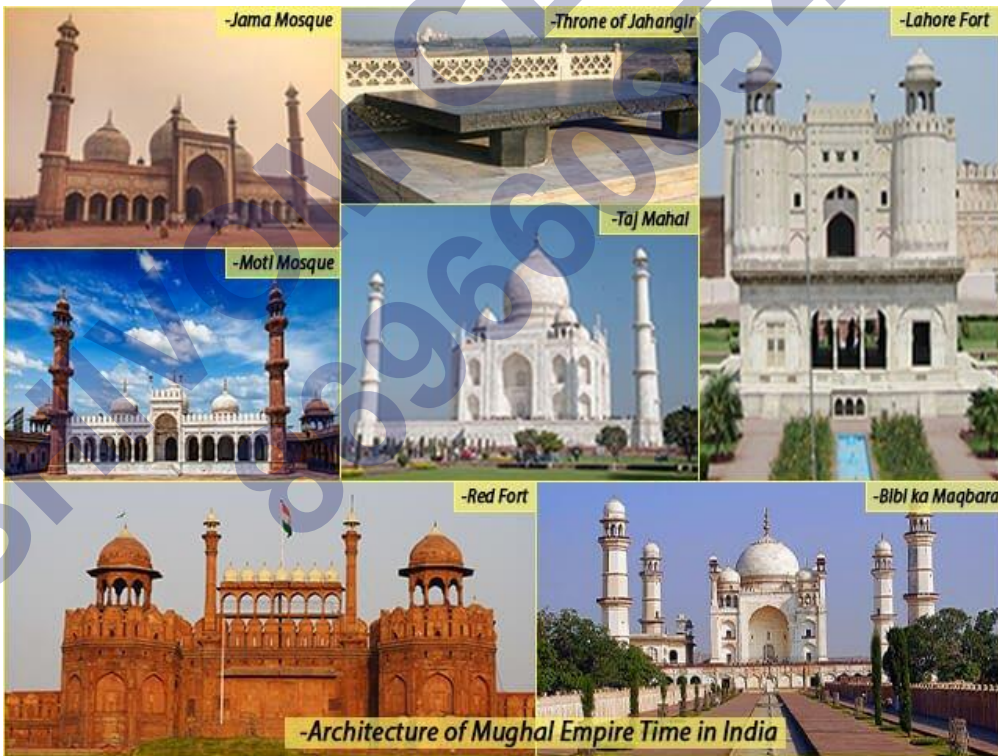
प्रारंभिक स्तूप, धातु-मंजूषा के ऊपर रखा मिट्टी का टीला होता था। बाद के काल में उस गुम्बदनुमा ढाँचे को तराशे हुए पत्थरों से ढक दिया गया। प्रायः स्तूपों के चारों ओर परिक्रमा करने के लिए एक वृताकार पथ बना होता था, जिसे प्रदक्षिण पथ कहते हैं। इस रास्ते को रेलिंग से घेर दिया जाता था, जिसे वेदिका कहते हैं।



कई शासनों के बीच करवटें बदलने वाले इस शहर के वास्तुकलात्मक माथे पर आज भी मुगल वास्तुकला का ताज है, इसका शरीर जैसे ब्रितानी महाराजाओं की चौड़ी छाती-सा लगता है और लड़खड़ाते हुए पांव ढुलमुल लोकतांत्रिक शासन का आभास दिलाते हैं।



ब्रितानी शासकों ने अपनी शानो शौकत का प्रदर्शन करने के लिए कई भव्य इमारतें खड़ी कीं मगर

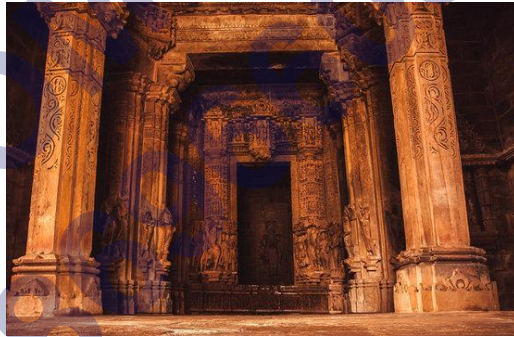


आज़ादी के बाद जब दिल्ली को आधिकारिक रूप से स्वतंत्र भारत की राजधानी माना गया, तो लोकतांत्रिक शक्ति प्रदर्शन के लिए ऐसी कोई इमारत नहीं खड़ी की गई, जिसे भारत की या राजधानी की पहचान कहा जा सके।

साँची का स्तूप



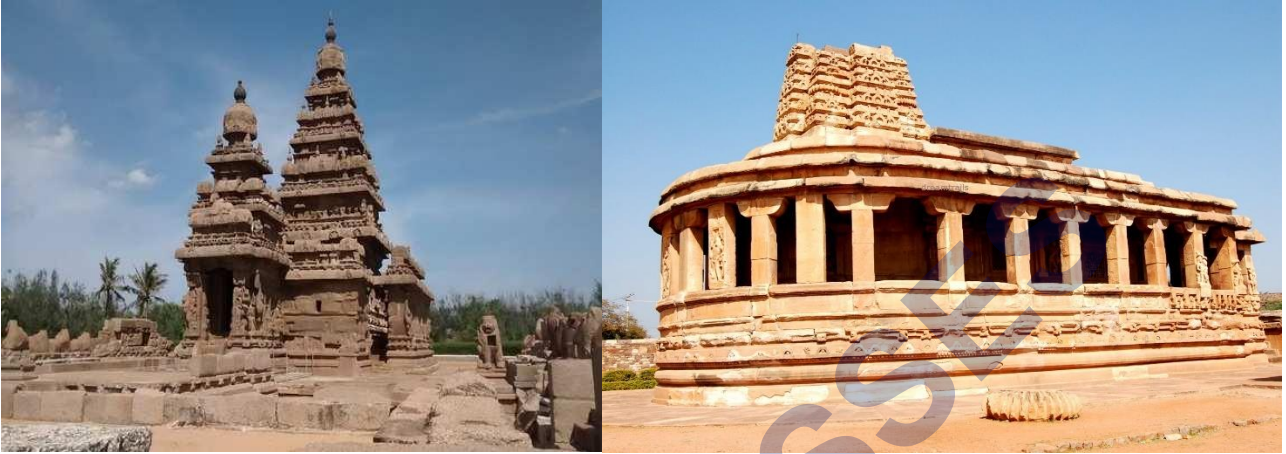
मध्य प्रदेश इस काल में कुछ आरंभिक हिन्दू मंदिरों का भी निर्माण किया गया। मंदिरों में विष्णु, शिव तथा दुर्गा जैसी देवी-देवताओं की पूजा होती थी। मंदिरों का सबसे महत्वपूर्ण भाग गर्भगृह होता था, जहाँ मुख्य देवी या देवता की मूर्ति को रखा जाता था।



पुरोहित, भक्त पूजा करते थे। भीतरगाँव जैसे मंदिरों में उसके ऊपर काफी ऊँचाई तक निर्माण किया जाता था, जिसे शिखर कहते थे।



अधिकतर मंदिरों में मंडपनाम की एक जगह होती थी। यह एक सभागार होता था, जहाँ लोग इकट्ठा होते थे। महाबलीपुरम और ऐहोल मंदिर।



शुंग वंश के अंतिम वर्षों में, स्तूप के मूल रूप का लगभग दुगुना विस्तार पाषाण शिलाओं से किया गया था। इसके गुम्बद को ऊपर से चपटा करके, इसके ऊपर तीन छतरियां, एक के ऊपर दूसरी करके बनवायीं गयीं थीं। ये छतरियां एक वर्गाकार मुंडेर के भीतर बनीं थीं। अपने कई मंजिलों सहित, इसके शिखर पर धर्म का प्रतीक, विधि का चक्र लगा था। यह गुम्बद एक ऊंचे गोलाकार ढोल रूपी निर्माण के ऊपर लगा था। इसके ऊपर एक दो-मंजिला जीने से पहुंचा जा सकता था। भूमि स्तर पर बना दूसरी पाषाण परिक्रमा, एक घेरे से घिरी हुई थी। इसके बीच प्रधान दिशाओं की ओर कई तोरण बने थे। द्वितीय और तृतीय स्तूप की इमारतें शुंग काल में निर्मित प्रतीत होती हैं, परन्तु वहां मिले शिलालेख के अनुसार उच्च स्तर के अलंकृत तोरण शुंग काल के नहीं थे, इन्हें बाद के सातवाहन वंश द्वारा बनवाया गया था। इसके साथ ही भूमि स्तर की पाषाण परिक्रमा और महान स्तूप की पाषाण आधारशिला भी उसी काल का निर्माण हैं।

साँची के स्तूप पर बुद्ध के जीवन की घटनाएं



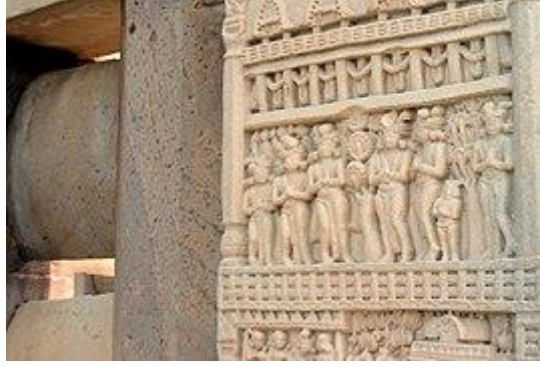
साँची के स्तूप पर बुद्ध के जीवन की घटनाएं दैनिक जीवन शैली से जोड़कर दिखाई गई हैं। इस प्रकार देखने वालों को बुद्ध का जीवन और उनकी वाणी भली प्रकार से समझ में आता है। इन पाषाण नक्काशियों में, बुद्ध को कभी भी मानव आकृति में नहीं दर्शाया गया है। बल्कि कारीगरों ने उन्हें कहीं घोड़ा, जिसपर वे अपने पिता के घर का त्याग कर के गये थे,



तो कहीं उनके पादचिन्ह, कहीं बोधि वृक्ष के नीचे का चबूतरा, जहां उन्हें बुद्धत्व की प्राप्ति हुई थी, के रूप में दर्शाया है



साँची की दीवारों के बॉर्डरों पर बने चित्रों में यूनानी पहनावा भी दर्शनीय है।



इसमें यूनानी वस्त्र, मुद्रा और वाद्य हैं जो कि स्तूप के अलंकरण रूप में प्रयुक्त हुए हैं।

स्तूप तथा मंदिर किस तरह बनाए जाते थे

पहला अच्छे किस्म के पत्थर ढूँढ़कर शिलाखंडों को खोदकर निकालना होता था।



यहाँ पत्थरों को काट-छाँटकर तराशने के बाद खंभो, दीवारों की चौखटों, फ़र्शों तथा छतों का आकार दिया जाता था। मुश्किल सबके तैयार हो जाने पर सही जगहों पर उन्हें लगाना काफी मुश्किल का काम था। मौर्य सम्राट अशोक सांची में 'स्तूप' का सर्जक था. ये स्तूप भगवान बुद्ध के लिए एक श्रद्धांजलि के रूप में अर्पित है. सभी स्तूपों में सांची स्तूप एक अर्द्ध परिपत्र चट्टान से बना हुआ सबसे महत्वपूर्ण और प्रभावशाली स्तूप है.



इस महान स्मारक को भगवान बुद्ध के अवशेषों को प्रतिष्ठापित करने के लिए बनाया गया था। सांची प्रसिद्ध को न केवल भारत में बल्कि दुनिया भर में मान्यता प्राप्त है। आज ये जगह बौद्ध धर्म का एक महान और प्रतीक केंद्र बन गयी है।

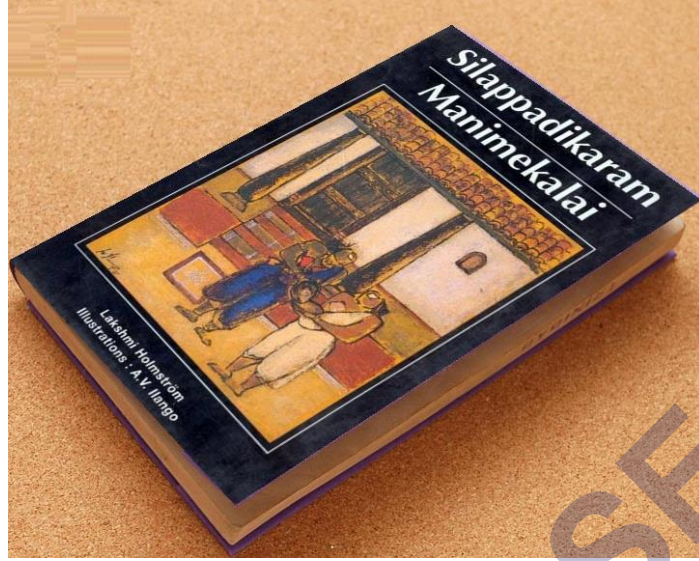
सबसे उल्लेखनीय संरचनाओं में महान स्तूप का पता 1818 में चला था। मध्य शताब्दी 3 ईसा पूर्व और बाद में मौर्य सम्राट अशोक द्वारा स्तूप का चलन शुरू किया गया था। सांची स्तूप बड़े पैमाने पर एक बड़े पत्थर द्वारा बना होता है जिसमें चार रेलिंग द्वार होते हैं।

ये रेलिंग विस्तृत नक्काशियों के साथ सजे होते हैं और उनमें बुद्ध के जीवन, अपने पिछले जन्म और अन्य बौद्ध धर्म के महत्वपूर्ण महापुरुषों के जीवन से जुड़े हुए तथ्य दिखाए जाते हैं। ये स्तूप अपने आप में एक आधार होते हैं जिसमें एक अर्धगोल गुंबद (अंडाकार आकार में) होता है और ये पृथ्वी पर स्वर्ग के गुंबद का प्रतीक होते हैं।



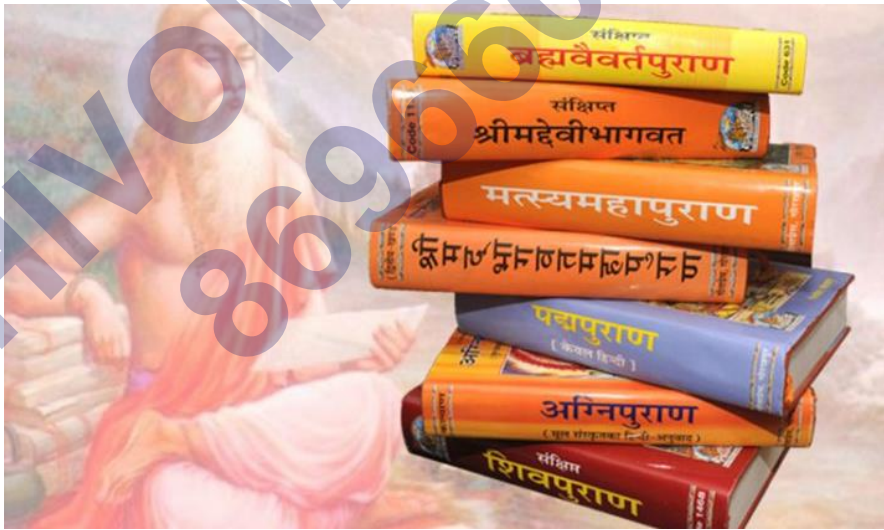
पुस्तकों की दुनिया

1800 साल पहले एक प्रसिद्ध तमिल महाकाव्य 'सिलप्पदिकारम' की रचना इलांगो नामक कवि ने की।



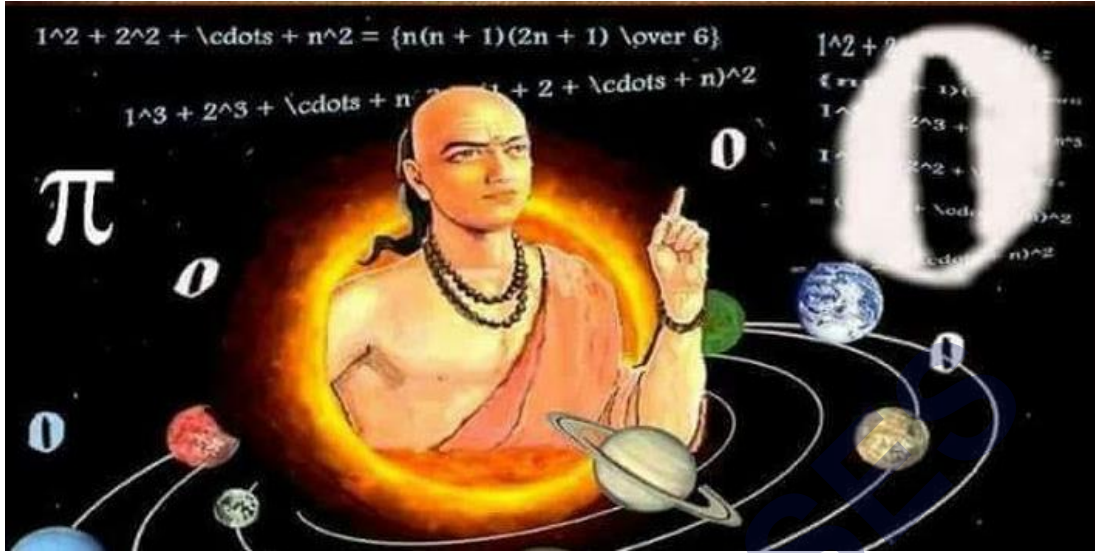
पुरानी कहानियाँ :-

पुराण का शब्दिक अर्थ है प्राचीन। इनमें विष्णु, शिव, दुर्गा या पार्वती जैसे देवी-देवताओं से जुड़ी कहानियाँ हैं। दो संस्कृत महाकाव्य महाभारत और रामायण लंबे अर्से से लोकप्रिय रहे हैं। पुराणों और महाभारत दोनों को ही व्यास नाम के ऋषि ने संकलित किया था। संस्कृत रामायण के लेखक वाल्मीकि मने जाते हैं।



विज्ञान की पुस्तकें

इसी समय गणितज्ञ तथा खगोलशास्त्री आर्यभट्ट ने संस्कृत में आर्यभट्टीयम नामक पुस्तक लिखी।



इसमें उन्होंने लिखा की दिन और रात पृथ्वी के अपनी धुरी पर चक्कर काटने की वजह से होते हैं, जबकि लगता है की रोज सूर्य निकलता है और डूबता है। उन्होंने ग्रहण के बारे में भी एक वैज्ञानिक तर्क दिया।

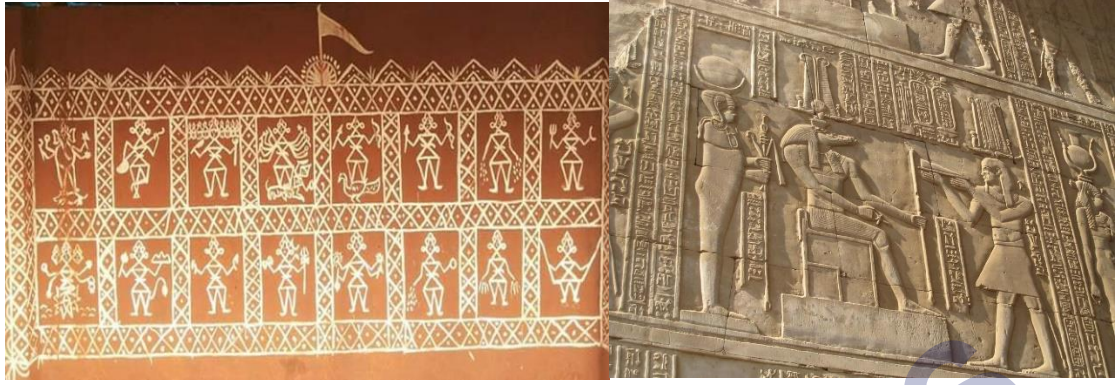
शून्य



भारत के गणितज्ञों ने शून्य के लिए चिन्ह का अविष्कार किया आयुर्वेद :- प्राचीन भारत में आयुर्वेद के दो प्रसिद्ध चिकित्सक थे - चरक " चरकसंहिता औषधिशाला (प्रथम - द्वितीय शताब्दी ईस्वी) और सुश्रुत- " सुश्रुतसंहिता में शल्य चिकित्सा (चौथी शताब्दी ईस्वी)

चित्रकला

कला के विभिन्न रूपों में 'चित्रकारी' कला का सूक्ष्मतम प्रकार है जो रेखाओं और रंगों के माध्यम से मानव चिंतन और भावनाओं को अभिव्यक्त करता है। प्रागैतिहासिक काल में मनुष्य गुफाओं में रहता था तो उसने गुफाओं की दीवारों पर चित्रकारी की।



भीमबेटका

भीमबेटका की गुफाएँ मध्य प्रदेश के रायसेन जिले में हैं। इनकी खोज डॉ विष्णु वाकणकर ने 1957-58 में की थीं। यह यूनेस्को की विश्व धरोहर है और यहाँ 750 से अधिक पत्थर की गुफाएँ हैं। इनकी दीवार पर प्रागैतिहासिक काल की चित्रकारी है।



यहाँ के सबसे पुरानी चित्रकारी 30,000 साल पुरानी है। यहाँ पुरा पाषाण काल, मध्य पाषाण काल, नव पाषाण काल, ताम्रकाल, प्राचीन और मध्य कालीन चित्रकारी है। पुरा पाषाण कालीन चित्रकारी में हिरण, गेंडा, शेर का चित्र प्रमुख है। मध्य पाषाण कालीन चित्रकारी में शिकार, जनजातीय युद्ध जैसी चित्रकारियाँ हैं। इसके बाद की चित्रकारी में यक्ष, वनदेव-वनदेवी, आसमानी रथ जैसे चित्र प्रमुख हैं।

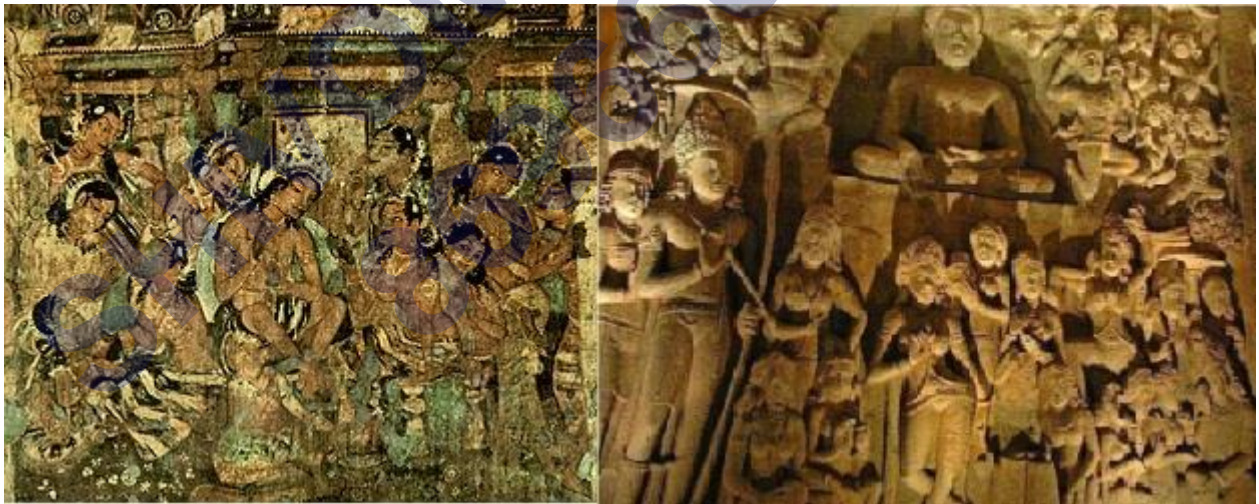
अजंता की गुफाएँ

अजंता की गुफाएँ महाराष्ट्र के औरंगाबाद जिले में हैं। इनकी खोज 1819 में हुई। इन्हें 1983 में यूनेस्को ने विश्व धरोहर स्थल घोषित किया। ये पत्थर से काटकर बनाई गई गुफाएँ हैं। इन्हें बनाने में लगभग एक हजार साल का समय लगा।



गुफाओं के निर्माण का प्रारम्भिक कार्य तवाहन काल में हुआ। बाद में अजंता की गुफाओं का निर्माण वाकाटक काल में भी हुआ।

16वीं गुफा में मरणासन्न राजकुमारी का चित्रकला है। 17 नंबर की गुफा का विकास हरिषेण ने कराया था और इसमें गौतम बुद्ध के जीवन से संबन्धित चित्रकारी है।



ऐलोरा की गुफाएँ

ऐलोरा की गुफाएँ भी महाराष्ट्र प्रदेश के औरंगाबाद जिले में हैं। ये बौद्ध, हिंदू और जैन धर्म की चित्रकारी से संबंधित गुफाएँ हैं। यहीं पर प्रसिद्ध कैलाश मंदिर है जिसे राष्ट्रकूट राजा कृष्ण प्रथम ने बनवाया।



बाघ की गुफाएँ

बाघ की गुफाएँ बौद्ध धर्म से संबंधित हैं। ये मध्य प्रदेश के धार जिले में हैं। यह प्राचीन भारतीय चित्रकला का बेहद उत्कृष्ट नमूना है। इनका विकास 5वीं से छठी शताब्दी के बीच हुआ था।



अन्य प्राचीन भारतीय गुफाओं की चित्रकारी

भारत में गुफाओं में चित्रकारी का इतिहास बेहद प्राचीन है। अजंता, एलोरा, बाघ की गुफाओं के अलावा तमिलनाडू की नीलगिरि की पहाड़ियों में कुमुट्टीपथी, मवादईप्पू, कारिककियूर में गुफा चित्रकारी भीमबेटका इटिनी ही पुरानी है।



कर्नाटक में बादामी के निकट हिरेगुड्डा में भी गुफाओं में चित्रकारी की गयी है। इसके अलावा ओडिशा की गुड़ाहंदी, योगिमाथा की चित्रकारी प्रसिद्ध है।

सातवीं शताब्दी में विष्णुधर्मोत्तर पुराण में 'चित्रसूत्र' नामक अध्याय चित्रकला से संबंधित है।

NCERT SOLUTIONS

प्रश्न (पृष्ठ संख्या 124)

प्रश्न 1 निम्नलिखित का सुमेल करो।

- | | | |
|----------------|---|--|
| 1. स्तूप | - | देवी देवताओं की मूर्ति स्थापित करने की जगह |
| 2. शिखर | - | टीला |
| 3. मंडप | - | स्तूप के चारों तरफ वृताकार पथ |
| 4. गर्भग्रह | - | मंदिर में लॉगो के इकट्ठा होने की जगह |
| 5. परदक्षिणापथ | - | गर्भग्रह के ऊपर लम्बाई में निर्माण |

उत्तर -

- | | | |
|-----------------|---|--|
| 1. स्तूप | - | टीला |
| 2. शिखर | - | गर्भग्रह के ऊपर लम्बाई में निर्माण |
| 3. मंडप | - | मंदिर में लॉगो के इकट्ठा होने की जगह |
| 4. गर्भग्रह | - | देवी देवता की मूर्ति स्थापित करने की जगह |
| 5. प्रदक्षिणापथ | - | स्तूप के चारों तरफ बना वृताकार पथ |

प्रश्न 2 खाली जगहों को भरो :AS

(क) एक बड़े गणतिज्ञ थे।

(ख) में देवी-देवताओं की कहानियाँ मिलती हैं।

(ग) को संस्कृत रामायण का लेखक माना जाता है।

(घ) और दो तमिल महाकाव्य हैं।

उत्तर -

- (क) आर्यभट्ट एक बड़े गणतिज्ञ थे।
 (ख) पुराणों में देवी-देवताओं की कहानियाँ मिलती हैं।
 (ग) वाल्मिकि को संस्कृत रामायण का लेखक माना जाता है।
 (घ) सिलप्पदिकारम और मणिमेखलई दो तमिल महाकाव्य हैं।

प्रश्न (पृष्ठ संख्या 125)

प्रश्न 3 धातुओं के प्रयोग पर जिन अध्यायों में चर्चा हुई है, उनकी सूची बनाओ। धातु से बनी किन-किन चीजों के बारे में चर्चा हुई है या उन्हें दिखाया गया है?

उत्तर - धातुओं के प्रयोग पर अध्याय 4, 8 और 9 में चर्चा हुई है। धातुओं से बनी चीजे जैसे- हलों के फाल, सड़सी और कुल्हाड़ी के बारे में चर्चा हुई है।

प्रश्न 4 पृष्ठ 122 पर लिखी कहानी को पढ़ो। जिन राजाओं के बारे में तुमने अध्याय 5 और 10 पढ़ा है उससे यह बंदर राजा कैसे भिन्न या सामान था?

उत्तर - दोनों की कहानियों के आधार पर दोनों राजाओं में कुछ समानताएँ थी और कुछ भिन्नताएँ थी। जहाँ बहुत राजा बड़ी बड़ी उपाधियाँ धारण करते थे, वहीं बंदर राजा के पास कोई उपाधि नहीं थी। जिस तरह ज्यादातर राजा अपनी प्रजा का ख्याल रखते थे उसी तरह बंदर राजा ने भी अपनी प्रजा का ख्याल रखते हुए अपनी जान दे दी।

प्रश्न 5 और भी जानकारी इकट्ठी कर किसी महाकाव्य से एक कहानी सुनाओ।

उत्तर - पृथ्वीराज रासो हिंदी भाषा में लिखा एक महाकाव्य है जिसमें पृथ्वीराज चौहाण के जीवन और चरित्र का वर्णन किया गया है। इसके रचयिता चंदबरदाई पृथ्वीराज के बचपन के मित्र और उनके राजकवि थे और उनकी युद्ध यात्राओं के समय वीर रस कविताओं से सेना को प्रोत्साहित करते थे। प्राचीन समय में प्रचलित प्राय सभी छन्दों का इसमें व्यवहार हुआ है। पृथ्वीराज रासो में दिए हुए सवंतो का अनेक स्थानों पर ऐतिहासिक तथ्यों के साथ मेल न खाने के कारण अनेक विद्वान

पृथ्वीराज के समसामयिक किसी कवि की रचना होने में संदेह करते हैं। इस रचना की सबसे पुरानी प्रति बीकानेर के राजकीय पुस्तक में मिली है। रचना के अंत में पृथ्वीराज द्वारा शब्द बेदी बान चला कर गोरी को मारने की बात भी की गई है। पृथ्वीराज अजमेर का शासक था। मुस्लिमान इतिहासकारों के अनुसार गोरी से पृथ्वीराज के दो युद्ध हुए थे। यह वीर रस का हिंदी का सर्वश्रेष्ठ काव्य है। पाठक रचना भर में उत्साह की एक उमड़ती हुई सरिता में बहता चलता है। अन्य रसों का भी इस महाकाव्य में अभाव नहीं है। महाकाव्य होते हुए भी पृथ्वीराजरसो में प्रबन्ध निर्वाह का अभाव है। नाना प्रकार की भाषायें इस ग्रन्थ में मिलती हैं। बहुत से शब्द तो ऐसे होते हैं जो उस समय के लिखें ही नहीं जान पड़ते हैं। इस रसो का काव्य रूप दसवीं शताब्दी के साहित्य के काव्य रूप से समानता रखते हैं। पृथ्वीराज का गोरी को बार बार क्षमा कर देना भले ही ऐतिहासिक ना हो, किंतु इससे नायक के चरित्र की उदारता का अभीष्ट प्रभाव पाठकों के हृदयपटल पर अंकित हो जाता है।